सम्पूर्णता वर्ष

सम्पूर्ण पवित्रता – 3

15.09.2014

1. **स्वमान** – मैं ब्रह्मा बाबा के कदमों पर कदम रखने वाला ब्रह्माचारी हूँ।

- ब्रह्मा बाबा का शिवबाबा से अटूट प्यार रहा...प्रथम दिन से ही वे उन पर बलिहार हो गये...उनकी हर आज्ञा को सिर-माथे रखा...इसीलिये वे एक साधारण मानव से महामानव, आदिदेव ब्रह्मा बन गये...वे आजीवन शिव बाबा से ऐसे जुड़े रहे कि दोनों जैसे हमारे लिए एक ही हो गए और हम उन्हें प्यार से **'बापदादा'** पुकारने लगे...मैं भी ऐसे ही ब्रह्मा बाबा के कदमों पर कदम रखने वाला ब्रह्माचारी हूँ...।

2. **योगाभ्यास** –

**अ. बापदादा उवाच – ``ब्रह्मा बाप को सदा सामने रखना, ब्रह्मा बाप को नयनों में समाये रखना, और ब्रह्मा बाप ने क्या किया, मन्सा वाचा कर्मणा वही करना।** कोई भी कर्म करने के पहले यह चेक करना, ब्रह्मा बाप का यह संकल्प रहा, यह बोल रहा, यह कर्म रहा, यह संबंध रहा, यह सम्पर्क रहा?``

ब. जैसे ब्रह्मा बाबा को उठते-बैठते, खाते-पीते, चलते-खेलते सदा यही ध्यान रहता था कि शिव बाबा का ध्यान है या नहीं...? वे स्वयं भी हर पल शिव बाबा को याद करते थे और औरों को भी याद दिलाया करते थे...ब्रह्मा बाप समान बनने के लिए हम उनके समान ही शिव साजन की याद में खोये रहें...सदा उनके साथ कम्बाइंड रहें...।

स. मैं ब्रह्मा बाबा के कदमों पर कदम रखने वाला ब्रह्माचारी हूँ...इस स्वमान का दिन में 10 बार गहराई से अभ्यास व अनुभव करें...।

द. मैं ब्रह्मा बाप समान पवित्रता का फरिश्ता हूँ...उड़कर सूक्ष्मवतन में जायें..बाबा से हाथ मिलायें..दृष्टि लें...स्वयं में पवित्रता की शक्ति भरें और आकाश में स्थित होकर प्रकृति के पाँचों तत्वों को भी पवित्र वायब्रेशन्स दें...।

3. **धारणा – एकनामी**

- यदि हमें जल्दी से जल्दी सम्पन्न और सम्पूर्ण बनना है तो हमें एकनामी बनना होगा। कहते हैं - `एक साधै, सब सधै। सब साधै, सब जाए।।` बहुनामी को ना माया मिलती ना राम। वे ना घर के रहते ना घाट के। इसलिए एकनामी बनें।

- दादी चंद्रमणिजी कहा करती थीं कि हम जिसका खाते हैं, उसी का गायें। ये नहीं कि खायें राम का और गायें रावण का...।

4. **चिंतन** –

– ब्रह्माचारी अर्थात् क्या?

-**'कैसे थे ब्रह्मा बाबा'**(विशेषकर `पवित्रता और ब्रह्मा बाबा`) - इस पर गहराई से विचार करके ब्रह्मा बाबा का एक शब्द चित्र बनायें।

5. <u>तपस्वियों प्रति</u> – हे तपस्वियों ! साकार में प्रभु मिलन की सुंदर वेला एक बार फिर से हम सबके लिए अपार खुशियाँ व असीम आनंद लेकर आ रही है। हम सब कितने खुशनसीब हैं जो परमात्मा पिता को इस धरा पर पार्ट प्ले करते हुए देख रहे हैं और उनके साथ खुद भी पार्ट प्ले कर रहे हैं, उनके साथ सर्व संबंधों का सुख ले रहे हैं । सचमुच यह ऐसी वेला है जिसका गायन शास्त्र-पुराणों में किया जाएगा। तो आइये, इस वरदानी वेला का सम्पूर्ण आनंद उठायें, न कि व्यर्थ वा अपवित्र संकल्पों में इस अमूल्य समय को नष्ट करें।